हम आपके हैं कौन

डॉ. उम्मेदसिंह बैद 'साधक'

Published by
Shuktika Prakashan
New Alipur, Kolkata 700063

Ham aapake hain kaun
Written by Dr. Ummedsingh Baid 'Sadhak'
ISBN : 978-93-84435-25-7
Published by : Sustika Prakashn
Unit 8, 5th floor, Phase-1
New alipur market complex,
Kolkata 700063
1st Edition, 2016
©All rights reserved to Authour
Printed By: Mishka infotech pvt. Limited
Unit 8 5th floor, Phase 1
New alipur market complex
Kolkata 700053
Price: Rs 65/
Cover : Pathik Sahoo

हम आपके हैं कौन
डॉ. उम्मेदसिंह बैद 'साधक'
प्रकाशक : शुक्तिका प्रकाशन
यूनिट ८, ५ फ्लोर, फेज – १
कोलकाता – ७०००६३
मुद्रक : मिसका इन्फोटेक प्रा. लिमिटेड
यूनिट ८, ५ फ्लोर, फेज १
न्यू आलीपुर मार्केट कॉम्प्लेक्स
कोलकाता७००० -५३
मूल्य : ६५/-

समर्पण

भारतीय सिनेमा की शत-वर्ष पूर्ति उत्सव में लालायित सभी मित्रों को।

स्वकथ्य

साधक 1994-95 में किसी संयोग विशेष के कारण मुम्बई में लगभग 18-20 महीने रहा। विरार की एक सामान्य चाल में बसर करते ग्रान्ट रोड़ और चैम्बूर आदि में सिनेमा से सम्बन्धित चयनित लोगों से मिलना और गीत-सँवाद लेखक के नाते अपनी स्वीकृति बनाने का प्रयत्न चला। उसी काल में राजश्री निर्माताओं की यह फ़िल्म पर्दे पर आई, और इसने साधक को लिखने के लिए प्रेरित किया। इसमें शब्दों को पकड़कर एक पूर्व-निश्चित क्रम में पंक्ति बनाना और उन सारी पंक्तियों को जोड़कर गीत बनाना होता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इस विधा पर अनेक रचनाएं दी हैं। इसी विधा के आगे किसी वाक्य को उल्टे क्रम में पढने पर भिन्न अर्थ निकलने वाली रचनाएं भी साधक ने पढी हैं, और उनपर कुछ अभ्यास भी किया।

प्रस्तुत पुस्तिका का आरम्भ एक फ़िल्म पर रचित पहेलियों का संग्रह है। लेखन क्रम में तत्कालीन अन्य सिने- हस्तियों के नाम पत्र भी हैं। अन्तिम बीस रचनाएं सिनेमा की

शताब्दी के उपलक्ष्य में बने विशिष्ट शीर्षकों पर स-प्रयत्न बनी रचनाएं हैं।

सम्प्रति अपने श्राद्ध-काल में इन रचनाओं ने साधक को फ़िल्म-निर्माण की दिशा में प्रेरित किया है। इस देह के अन्तिम पड़ाव पर यह खर्चीला और उच्च तकनीक वाला उपक्रम साधक को नया उत्साह देता है। अपने पूज्य पिताश्री की तरह अन्तिम क्षण तक सार्थकतापूर्वक जीने का आलम्बन भी बना है।

सिनेमा विधा को साहित्य का अवरोधक-बाधक मानना या अप-संस्कारों की जननी कहना उचित नहीं लगता। वर्तमान तकनीकी युग में साहित्य की एक अग्रणी धारा के रूप में सिनेमा की स्वीकृति बनने लगी है। यह सरस-सरल काव्य पहेली-शतक इस दिशा में साधक की विनम्र प्रस्तुति है। इस दिशा में और सुन्दर प्रयत्न होंगे, इति शुभ-कामना।

— साधक

अक्षर आधारित

हम आपके हैं कौन- पंक्ति का चौथा अक्षर

अगर **ह**म आपसे कहें कि फ़िल्म में मारपीट कुछ नहीं है
और क**म** से कम एक विलेन तो हो- वह भी नहीं है

पूछेगे **आ**प कि नाच गाने हैं- मगर उसमे सेक्स नहीं है
अब आ**प** चौकेगें- अरे भाई ! तो फिर फ़िल्म क्या है ?

विवाह **के** प्रसंगों का- बस एक एलबम सा है ।
गायन **हैं**- इतने सुरीले कि कान में घोला अमृत सा है ।

सितारा **कौ**न ? हीरो नहीं, निर्देशक ही होता है
यकीन**न** 'सूरज' की रोशनी में दम होता है ।

हम आपके हैं कौन- पंक्ति का पांचवा अक्षर

कर है दी हमने तारीफ बहुत, अब भूल बतायें
फ़िल्म की कम से कम एक गलती पर भी ध्यान दिलायें।

पहला ही आया जो सीन क्रिकेट खेलते सारे
लडकी की पहली ही बॉल पर हीरो चौका मारे।

बॉल सीमा के बाहर, उसके पीछे लड़की दौड़ी
पधारती हैं बुआ सामने, पीठ से टक्कर मारी ?

कहो यह कौन सी रीत, कि पीछे से आगे आकर के
रोकी गेंद, नहीं समझा मैं- समझा दो आकर के।

हम आपके हैं कौन- पंक्ति का पांचवा अक्षर

राजश्री ने हरदम संस्कृति मूल्यों को स्वीकारा।
हिंसा या काम बढ़ाये, उन तत्वों को सदा नकारा।

तपस्या का आ जाता है जब अंतिम बिंदु किनारा।
फल तब परगट होते है, और महकता उपवन सारा।

हम आपके हैं कौन फ़िल्म शुची परम्परा-फल है
दादा होते हैं खुश स्वर्ग में पोता पूर्ण सफल है।

कृपा रहे कौशलपुर राज की, रचनाधर्म निभाना
अब तुम नहीं बैठना सुख से- आगे बढ़ते जाना।

हम आपके हैं कौन- पंक्ति का सातवां अक्षर

क्या एक्टिंग है कहने जैसी, एक से बढ़कर एक
सजे सितारे गमले में, फूलों की खुशबू नेक।

गीत संगीत भी आपके मन को मोहित कर देता है
नाच उठे सब पहली थाप पे सबका मन करता है।

कथा औ' संवाद के तो कहने ही क्या हैं भैया
बाँध के रखते हैं दर्शक को चार घड़ी तक भैया।

है डाइरेक्टर कौन, यही है सफल फ़िल्म का राज
चमक सितारे नहीं, सिर्फ सूरज प्रकाश का राज।

हम आपके है कौन –पंक्ति का आठवां अक्षर

संयुक्त परिवार हम साथ सारे रहते
गाय कुत्ता गधा हमरे संग सारे रहते।

दुःख सुख विपत्ति आपत्ति में है संग
खेले कूदे नाचे कप साथ चाय पीते।

आया संदेश इसके देखने से भैया
नौकर संग गाते हैं नाचते ओ' हंसते।

संग से बड़ा सुख कौन दुनियां में कहो
संग ना हो तो जिन्दा न ही हम रहते।

हम आपके हैं कौन –पंक्ति का छटवां अक्षर

कहने को तो हमने कवितायें कर दी है बहुत सी
काम करेगी मगर ये कैसे, मन में है उलझन सी।

देखी फ़िल्म आपकी तब ही उठे ये मन में भाव
फिल्मकार से पहचान की तीव्र उठी है चाह।

सारा लिखना केवल सूरज के ध्यान में मैं आ जाऊँ
बिखर रहे है मूल्य, उन्हें कुछ मैं भी समेट पावूं।

ईश के सिवा कौन सी है प्रेरणा है पवित्र इस जग में
जो भर सके नयन में ज्योति, इस अंधियारे जग में।

हम आपके हैं कौन –पंक्ति का तीसरा अक्षर

पनाह होगी कहाँ सिनेमाघर के मालिक बोले
ले हम आपके हैं कौन बड़े विश्वास से सूरज बोले ।

मैंने आपसे प्यार किया विश्वास नहीं तोडूंगा
समीप भी घाटे को सुनिए आने मैं ना दूंगा ।

आपके हॉल से एक वर्ष पहले ना उतरे पिक्चर
सब है हिट होने के लक्षण चले खूब ये पिक्चर ।

आगे कौन कमायें कितना, टिकट के रेट अलग हैं
कह नहीं सकते, सब प्रान्तों के नियम अलग है ।

हम आपके हैं कौन –पंक्ति का तीसरा अक्षर

कलह नहीं सब सुलह करें सूरज का है संदेश
कलम नहीं अब फ़िल्म चले, यह समय का है आदेश।

सब आते हैं बार बार, देवर दीवाना सुनने
सिर पर हावी है पिक्चर सब लगे गान ये गुनने।

इसके तेवर देख गगन में ताराचन्द हर्षित हैं
सब हैं राजश्री के चलते, इतना ही वर्णित है।

देखें कौन शताब्दी भर में, इससे आगे जाता
जेहन में घुसकर, संस्कार बदल के जो दिखलाता।

हम आपके हैं कौन –पंक्ति का दूसरा अक्षर

महक गया गीत और संगीत है इतना प्यारा
समता आई चंचल मन में, ध्यान का अनुभव सारा।

कौआ और कुत्ता भी फ़िल्म के अंग हैं इतने प्यारे
माप नहीं सकता कोई अंदाज सभी के न्यारे।

पके हुए फल की मिठास और ताजगी का अहसास
कहें किस तरह गूंगे के गुड़ की जैसी ये मिठास।

बकौल इसके फिल्मों का गिरता बाजार उठा है
जान आ गई इण्डस्ट्री में, सबका भाव उठा है।

हम आपके हैं कौन –पंक्ति का दूसरा अक्षर

कह नहीं सकते शब्दों में क्या बात है इस पिक्चर में
कम से कम सौ कवितायें बना पाये इस क्रम में।

थी आई और चली गई यूँ तो सैकड़ों ही फिल्में
चाप सुनाई दे वर्षों तक ऐसी कम है फिल्में।

सके ना कोई भुला, देखले एकबार जो इसको
सहें सैकड़ों बार शुल्क देकर भी देखें इसको।

है कौन सा दर्शक ऐसा, बोर हुआ हो इससे
कौन है जिसके मन में ना आई हो खुशियाँ इससे।

हमदम मेरे - पद का पहला अक्षर

हमदम मेरे, मान भी जाओ कहना मेरे प्यार का
हल्का हल्का सुर्ख लबों पे, रंग तो है इकरार का। स्थिर
मस्त बहारें झूम के, आयी तेरे द्वार
मत हो गाफिल ओ सनम, अब तो बाँह पसार।१
आपके सामने, आपके प्यार में
दीवाना आहें भरता है, निमंत्रण जल्दी भेजो तुम , २
.........हमदम मेरे, मान भी जाओ...
पहले पहले प्यार का, प्यारा यह अहसास
मीठा मीठा दर्द है, आऊँ तेरे पास।३
केर के झाड़ पर, चढ़ा में धारकर
पुकारोगे जो देखा तो, उतारो जल्दी आकर तुम।४

…   …हमदम मेरे, मान भी जाओ, ……

हैं लाखों इस राह में, देगें मेरा साथ
लेकिन दिल से माँगता, केवल तेरा हाथ ।५
कौन सी बेबसी, तुम्हें है रोकती
कह नहीं सकते हो तो क्या, इशारा ही कर दो ना तुम ।६
---------- हमदम मेरे ------------

नहीं चलेगी खामोशी, कुछ तो बोलो यार
अपनी समझ को छोड़के, कर लो हमसे प्यार ।
ये सच है कम से कम तो ये मेरे सनम
लुटाऊँ ऐसे नगमे रोज, बांह से थामो मुझको तुम ।७
---------- हमदम मेरे ------------

नशा प्यार का – वैकल्पिक पंक्ति, प्रथम अक्षर

हम आपके है कौन ? ये प्रश्न बड़ा कातिल है
आपके लब से सुना है जबसे हम पूरे घायल हैं ।
मन ना लगता किसी काम में इसी सोच में डूबा
फिर से प्रश्न यही आये, यह सोच के ही चंचल है ।
आपने जिस अंदाज से पूछा, बेशक लाजबाब
साहेब उस अंदाज में ही तो छुपा हुआ उत्तर है ।
पहली झलक में पकड़ लिया अब कहाँ जायें बोलो तो
बेताब वही झलकी पाने, उस नजर का ही कायल है ।
केवल एक ही धुन काफी जीवन भर गीत चलेगा
फूटे उन सांसों के स्वर तो मन बजती पायल है ।
हैं हम प्यासे जनम जनम के दो बुँदे मिल जाये
अमृत घट के मुंह पर मेरे अधर जड़ित चुम्बन है ।
कौन सहारा तूफानों में फँसी हुई नौका का
तेरे सिवा नहीं कोई भी सनम मेरा साहिल है ।
नशा प्यार का सारी उम्र चलेगा यूं ही हमदम
जाने कितने जनम बाद किस्मत में कुछ हासिल है ।

हक है मेरा – पद का प्रथमाक्षर

हक़ है मेरा, यही मांगता दूजा कुछ ना चाहूँ
अच्छी फ़िल्म के रचनाकार से मैं तो मिलना चाहूँ।
मत कहना कि समय नहीं है, धैर्य बड़ा है मेरा
आज नहीं तो कल होगा ही, यह निश्चय है मेरा।
आप बुलायें तब आऊँगा, तब तक लिखना मुझको
दिनचर्या के बाकी काम भी करने पड़ते मुझको।
परिचय जब तक ना होगा, तब तक क्या पता चलेगा
क्या है नियति गर्भ में, कुछ भी ना मालूम पड़ेगा।
केशर घुली हुई अंतर में, कहाँ बिखेरूं कहना
नहीं बुलाया तुमने तो मैं जाऊँ कहाँ पता ना।
हैं सब लक्षण शुभ और समय भी बेहतर ही आयेगा
क्या निकलेगा मिलन योग से समय ही बतलायेगा।
कौशल तो है इसी बात में ना इन्कार हो मन में
प्रभु की कृपा से योग बने जो, बस स्वीकार हो उसमें।
नम्र निवेदन इस साधक का, जल्द करो स्वीकार
पहली ही फुर्सत में मुझको बुलावा लेना यार।

सबको मस्त करे- पद का प्रथमाक्षर

हर बिन्दु पर राजश्री की गरिमा का था ध्यान
एक भी बात ना पाये संस्कृति विरुद्ध सुजान ।
दीदी देवर वाला गाना टुटा टूटी का खेल
लड़की के घर रात्रि में होता आया ये खेल ।1॥
मस्ती सबको आ जाये बोझिल ना हो जाये कथ्य
शादी के माहौल में सबको रहती मस्ती सत्य ।
छेड़छाड़ इन मौकों पर युवजन सारे करते हैं।
माधुरी सलमान तभी सबको प्यारे लगते हैं ।2॥
आपद धर्म है जीजा के संग साली ब्याही जाती
बच्चे की मौसी ही अक्सर माँ बनकर घर आती
इस बिन्दु पर भातृ-प्रेम की झाँकी आ जायेगी।
यह तो तय है माधुरी-सलमान के संग आयेगी ।3॥
पहली बात है गीत सभी बस लोकगीत बन जायें
ताक धिना धिन धुन आये तो बच्चे बूढ़े गायें ।
घर-परिवार-मोहल्ला मिलकर साथ गीत गायेगें
शहर गाँव चौपाल गली में यही गीत गायेंगे ।4॥

केशव माधव राम और हनुमत साथ है अपने
हर सुख दुःख में राम साथ फिर कैसा भय है मन में ।
नौकर के संग नटखट कान्हा की दोस्ती दिखला दें
सभी घरेलू नौकरों को उनका सम्मान दिला दें ।5
हैं सारे ही तत्व-फ़िल्म क्यों सुपरहिट ना होगी
बस चित्रण में सावधानी हो तो ये चर्चित होगी ।
पहले हॉल ठीक करवाये ध्वनि-विस्तारक यंत्र
पूरे साल ना उतरेगी किलीत है इसका मन्त्र ।6
कौन भला सूरज के सम्मुख टिक सकता है आज
तारा चाँद से रोशन है ज्यों मूल से प्यारा ब्याज ।
राजश्री को एकसाथ शतगुणित रूप धरना अब
संस्कृति के मूल्यों का रक्षण आगे करना अब 7।
नहीं अकेले आज देश में लाखों ही जन संग
अच्छी फिल्मों की खातिर बाजार नहीं है तंग ।
नेक इरादा पक्का करके फैलाओ सब किरणें
काले बादल छंट जायेंगें बिखरे श्री की किरणें ।8

दीवाना क्लब

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब-1

बेटा बोला, क्यों पापाजी आप भी है दीवाने
बाथरूम में घुसकर गाये, इसी फ़िल्म के गाने।

मम्मी से कह दूंगा आप भी "दीदी-देवर गाते
हम गायें तो भरी हुई महफिल में क्यों धमकाते ?

हंसकर बोले पापा, प्यारे बेटे रखना मौन।
क्या करूँ ? मैं देख आया हम आपके हैं कौन।

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब २

बिटिया बोली मम्मी से, क्या गजब कर रही हो तुम
"माई नी माय मुंडेर पे तेरी" गाना गा रही हो तुम।

पापा को यदि पता चले, तुम पीले हाथ करोगी
उनके गुस्से से मम्मी, बेमौत यहीं मरोगी।

गाल थप थपाकर बोली अब फिर से न बोलूँगी
"हम आपके हैं कौन" फ़िल्म भूल से ना देखूंगी।

<u>हम आपके है कौन –दीवाना क्लब ३</u>

जीजा साली दोनों मिलकर गये देखने पिक्चर ।
साली बोली क्या जीजा जी, दीदी का नहीं देवर ?

अगर वो होता प्रेम तो मैं भी निशा ही रखती नाम
हम चारों मिलकर के फिर, हो आते चारों धाम ।

जीजा बोले ओ साली ! माधुरी न खुद को जानो
एक ही भाई काफी है, परिवार नियोजन मानो ।

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब ४

मुन्ना पूछे काका से, बतलाओ काका मुझको
प्रेम के घर जो रहती है, लड़की क्या लगती उसको ?

मामी की भतीजी है – काका बोला हकलाकर
क्या लगती है ! क्या मालूम ?क्या होगा तुम्हें बतलाकर ?

मुन्ना बोली यही पहेली समझो अंकल जॉन।
इसीलिए तो नाम रखा है हम आपके हैं कौन ?

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब ५

मुन्नी टीचर से बोली मेडम एक बात बताओ
चची जान और डॉक्टर चाचा से दोस्ती करवाओ।

मुसलमान हिंदू के घर में सदस्य से लगते हैं
सिर्फ खुशी ही नहीं दुःख में भी शामिल होते हैं।

टीचर खुश होकर बोली हम आपके हैं कौन
सांप्रदायिक सदभाव का हक़दार दूसरा कौन ?

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब ६

फ़िल्म देखकर दादी बोली, यह कैसी है बात
सारे रिश्तों को दिखलाया, छोड़ी मेरी बात।

अपने दादाजी को भी, प्रारंभ में याद किया है
अरे दुष्ट सूरज तूने दादी को क्यूं छोड़ा है ?

छुटकी बोली ओ दादी तेरा देवर दीवाना
उसे भेजना मेरे साथ गायेगा वो भी गाना।

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब ७

राम, श्यामू गोविन्दा, गोपाल सभी मिलकर के
घर के सारे नौकर मिलकर चढ आये सूरज पे।

लल्लू जैसे घर का नौकर यदि क्रिकेट खेलेगा
इतनी बड़ी हवेली क्या डाइरेक्टर साफ करेगा?

सूरज बोला शोर करो ना, हो जाओ सब मौन
मैं तो पहले ही बोला "हम आपके हैं कौन"

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब ८

देश के सारे गदहों ने मिलकर प्रस्ताव ये रखा
सूरज ने क्या हमको भी अपने जैसा ही समझा?

शादी की है धूम धाम, कुत्ता भी संग खाता है
खुद जैसे ही हमको भी पिछवाड़े ही रखा है

सूरज बोला तुम हो मेरे बाकी सब है गौन
तुमको छोड़के सबको बोला "हम आपके हैं कौन"

<u>हम आपके है कौन –दीवाना क्लब ९</u>

काँव कॉँव करके सब कौवे, सूरज पर चिल्लावे
रायल्टी दो हमरे नाम पे तू ने कोटि कमाये।

‘मैंने प्यार किया’ में तो, कबूतर खुद आया था
लेकिन अबकी बार मुंडेर पे कागा ना आया था।

सूरज बोला भैया तुम व्यापार की बात ना जानों
नाम तुम्हारा हुआ मुफ्त में –यह अहसान तो मानो।

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब १०

फ़िल्म का कुत्ता डाइरेक्टर को डांटे जाकर उल्टा।
सबका नाम सार्थक रखा, मेरा क्योंकर उल्टा।

प्रेम-निशा-लल्लु सारे ही नाम का देते अर्थ
बड़ा सरल हूँ फिर भी रखा टफी नाम क्यों व्यर्थ ?

भौंचका रह गया सूरज –क्या उत्तर उसको देगा ?
यही सोचता आगे से खुद स्क्रिप्ट नहीं लिखेगा।

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब ११

कहार टोली कि चिट्ठी है, सूरज उत्तर देना।
सच्ची बात लिखी है भैया, बुरा नहीं कुछ लेना।

दो दो हुई शादियाँ, और गाने में जिक्र आया था
एक बार भी सीन में डोली कहार ना आया था।

सारी परम्परायें रखी क्यों हमको ही टाला ?
उत्तर देना क्या उसमे भी है कोई घोटाला ?

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब १२

तर्ज – माइ नी माई मुँडेर पे तेरी बोल रहा है कागा।

जूतों की कॉलर टाईट है, इतराते हैं सारे
गाना हिट हो गया है उनका, हो गये वारे न्यारे

जूतों की कॉलर टाईट है, हो गये वारे न्यारे
गाना हिट हो गया है उनका, इतराते हैं सारे।

सबने मिल प्रस्ताव किया, सूरज का है उपकार
चलो सभी मिल दे आयें, उसको कोई उपहार ।

और तो क्या दे सकते हैं देते दिल से आशीष
अगले जन्म में पड़ेगें, सौ सौ जूते तेरे शीष ।

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब १३

अर्जी है भगवान की, सूरज के दरबार
दो दस बारह फ़िल्म तुम हो मेरा उद्धार ।

हो मेरा उद्धार फ़िल्म में तो पूजेंगें
वरना मन्दिर में तो कभी नहीं पहुँचेगें।

कह साधक कविराय तभी तो पैसे बरसे
नारायण खुश हो तो लक्ष्मी क्यों ना बरसे ।

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब १४

दोस्त मिले कुछ साथ में, निकली चर्चा एक
दोस्ती पर तो राजश्री की दृष्टि है नेक ।

बिना किसी अतिरेक के, दोस्ती का सम्बन्ध
हरेक फ़िल्म में होता है, इसका कोई प्रबंध ।

असहमति का स्वर लिए खड़ा रहा मैं मौन
तुमसे सूरज ! पूछना "हम आपके हैं कौन" ।

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब १५

माधुरी के दीवाने – मकबूल फिदा हुसैन
समझ नहीं आता कैसे – हो गये फिदा हुसैन !

पच्चासों ही बार फ़िल्म को देखा है सब बोलें
माधुरी दिखती है, सूरज नहीं दिखता क्या बोलें ।

सिर्फ अंधरे में देखेगें वर्ष भले अस्सी हो
सूरज के दुश्मन के कुल में, देह ये आन फसी हो ।

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब १६

फिल्मी लेखक संघ ने करदी है हड़ताल
बिना कहानी फ़िल्म है, अपना क्या हो हाल।

अपना क्या हो हाल, कौन हमको पूछेगा
निर्माता तो सूरज के रास्ते ही चलेगा।

कह साधक कविराय हॉल भरते हैं प्रेक्षक।
भले करो हड़ताल, जोर से फ़िल्मी लेखक।

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब १७

गीतकार सब खुश हुए, समय पुराना आया
गानों से हो फ़िल्म हिट, समय सुहाना आया।

समय सुहाना आया, अपनी बात बनेगी
चार घड़ी, छत्तीस गानों की फ़िल्म बनेगी।

कह साधक कविराय भरम को छोड़ो भाई
गानों की नहीं सूरज की है यह तरुणाई।

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब १८

फिल्मों के बाजार का एक धुरंधर बोला
अपना ही री-मेक बनाया, सूरज कितना भोला ।

सूरज कितना भोला, अक्कल नहीं है उसको
बच्चा है, कोई समझाये जाकर उसको ।

कह साधक धुरंधर सूरज है व्यापारी।
खुले आम अपनी ही फ़िल्म, कर दी बाजारी।

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब १९

सेक्स नहीं हिंसा नहीं, खलनायक ना एक
हिंदी फ़िल्म ना बन सके, यह विचार था नेक ।

यह विचार था नेक, सभी वितरक घबराते
ऐसी फ़िल्म को भूल से भी ना हाथ लगाते ।

कह साधक कवि भारत का स्वर सदा अहिंसा।
खलनायक ही लगते सबको सेक्स और हिंसा।

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब २०

फ़िल्म हो गई लम्बी ज्यादा, दो गाने काटे थे
उन गानों के साथ जुड़े, कुछ मस्त सीन काटे थे ।

चली फ़िल्म इतनी ज्यादा कि रिकॉर्ड सारे तोड़े
पूरे साल के बाद पुनः वे दो गाने भी जोड़े ।

अब दो वर्षों बाद नया कुछ फिर आयेगा
दो हजार तक कोई इसे ना हटा पायेगा ।

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब २१

राजश्री की ख्याति में अब लगा नया ये पंख
आसमान से भी आगे ले जायेगा ये पंख।

कोई नहीं है प्रतियोगी, सूरज के सम्मुख आज
स्वयं चुनौती बन गया, उसका ही आगाज !

सूरज का ये कॉल है, हार नहीं मानेगें
आसमान से आगे भी हम झंडे गाड़ेंगे।

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब २२

जितने लोग जुड़े सभी, हो गये मालामाल
पैसे ढेर मिले सबको, हो गये लालमलाल।

हो गये लालम लाल राजश्री की बलिहारी
राम करे पिक्चर अनेक दे ऐसी प्यारी।

कह साधक कविराय, कमाये पैसे इतने
हो गये मालामाल, जुड़े थे लोग जितने।।

हम आपके है कौन –दीवाना क्लब २3

हम आपके हैं कौन
उत्तर में आता है मौन।

हम आपके हैं कौन
जैसा आपका दृष्टिकोण !

हम आपके हैं कौन
समय बताये दूजा कौन ?

हम आपके हैं कौन
इसी भाव से धारा मौन !
हम आपके हैं कौन

हम आपके हैं कौन - दीवाना क्लब-२४

तर्ज - आज हमारे दिल में अजब ये उलझन है

झूम के सब गायें तराने सूरज के
बीती रजनी आये जमाने सूरज के।
निर्देशक में कोई जोड़ ना इसका
सभी सितारों पर जोर है इसका।
राज की बतायें.......
आइये हम सुनायें बहाने किस्मत के
मेहनत से ही खुलते खजाने किस्मत के
झूम के सब गायें तराने सूरज के।
दादाजी से पाई घुट्टी जो इसने
भारतीय रस्में ना छोड़ी इसने।
राज की बतायें ......
आइये हम बतायें ये क्यूँ इतना चमके
ताराचन्द से पाई रोशनी से दमके।
झूम के सब गाये तराने सूरज के॥

हम आपके हैं कौन- दीवाना क्लब – २५

तर्ज...वाह वाह राम जी

माह एक बीता ये फ़िल्म नहीं देखी
हम आपके हैं कौन, मैंने नहीं देखी
सबसे अच्छी फ़िल्म यही है जितनी मैंने देखी।
माह एक बीता........
माधुरी मेडम नाची प्यारी
सलमान ने की एक्टिंग न्यारी
अनुपम ऐसा भाया, रीमा लागू ने लुभाया
लक्ष्मी कान्त ने तो देखो सबका छक्का ही छुड़ाया
इतनी सुन्दर ताल मेल तो कहीं नहीं देखी
सबसे अच्छी फ़िल्म यही है जितनी मैंने देखी।

माह एक बीता.......
कहानी क्या बस थीम ही है
एक शादी की सब रीत ही है
पर स्क्रिप्ट है अनूठी, ये तो कहीं नहीं रूठी
निर्देशक से तो भैया कोई बात नहीं छूटी
गीत और संगीत की जुगल बंदी देखी
सबसे अच्छी फ़िल्म यही है जितनी मैंने देखी
माह एक बीता......

अन्तिमपद

विविध - अंतिम पद

तुमको नित लिखता हूँ सूरज ध्यान तो आता होगा
तेरे निकट चाहता आना, समझ में आता होगा।

संयोग से बंधा हुआ बम्बई मैं आ टपका हूँ
बोझ नहीं हूँ किसी तरह भी मैं हल्का फुल्का हूँ।

आपके संग लेखन निर्देशक से जुड़ना चाहता हूँ
निर्णय जल्दी लें तो बेहतर यह कहना चाहता हूँ।

हो सकता है कुछ महीनों में हो जाऊँ मैं मौन
कभी जान भी ना पाओगे हम आपके हैं कौन।

विविध - अंतिम पद

लिख सकता हूँ कथन, कहानी, गीत और संवाद
छपी हुई है इससे पहले मेरी आठ किताब।
दो नाटक कलकत्ता में मंचित हो चुके हैं भैया
रेडीमेड व्यापार साथ में करता रहा हूँ भैया।
करोड़पति पापा का हूँ इकलौता बेटा सुनना
बैंगलोर और कलकत्ते में बड़ा व्यापार है गुनना।
धर्म विरुद्ध एक छोटी बात पे पापा को छोड़ा है
ग्रह-दशा ने मुझको फिर बम्बई से ला जोड़ा है।
इससे पहले फिल्मों के हित नहीं लिखा एक शब्द
सूरज बड़जात्या को ही लिखे हैं इतने शब्द।
मिलते रहो कह दिया है गुप्ताजी ने तो भैया
ऐसे तो टिकना मुश्किल है बिन पैसे के भैया।
कोशिश तो जारी है तुम कुछ हाथ बटाओ दोस्त
यह ना कहना भाग ही जाओ, हम आपके हैं कौन।

विविध - अंतिम पद

सोचा था कि एक बार सूरज के साथ देखेंगें
दिल छूते दृश्यों पर थोड़ी वार्तालाप करेंगें ।
तारीखों में चाहें तो लाखों ही पृष्ठ भर जायें
कौन आजकल पढ़ता है, क्यों व्यर्थ ही समय गवायें ।
इसिलए चौंकाने वाली शैली में लिखा था
सूरज पढ़ के स्वयं मिलेगा, हमने यह सोचा था ।
यह आशा तो टूट गई, लेकिन हम तो मजबूर
फ़िल्म जब भी देखेंगें तो लिखना है हमें जरुर ।
सप्ताहों की गिनती का ध्यान भी क्या रखना है
कविता अच्छी हो या बुरी ये ध्यान नहीं रखना है ।
इतनी अच्छी फ़िल्म देख मुश्किल है रखना मौन
भले हमें कह दे सूरज हम आपके हैं कौन ?

करमुक्त

हम आपके हैं कौन –करमुक्त-1
प्रथम अक्षर

हड़बड़ करके गड़बड़ करदी कैसे हैं ये लोग
महाराष्ट्र सरकार के निर्णय से चौकें है लोग।

आकर्षण है जनता का मनोरंजन से भरपूर
पहली पसंद है अब तक तो रहता है हॉल भरपूर।

केवल कर माफी से कई करोड़ फिसल गये ऐसे
है मूरख सरकार, काम करती ही क्यूँ है ऐसे ?

कौन इन्हें समझाये फ़िल्म ये जल्दी नहीं उतरेगी
नहीं नहीं करते पांच साल तक कर ये नहीं भरेंगी।

हम आपके हैं कौन –करमुक्त-2
ऊपर से नीचे, उतरते क्रम में

हम तो झूठ हो गये सूरज जो तुमको लिख डाला
कम से कम दो वर्षों बाद ही आये नया मसाला।

कहा आपसे फ़िल्म लिबर्टी में छः साल चलेगी
सुना आपने नहीं तो फिर अब क्या अपनी भी चलेगी ?

कर मुक्त के आदेशों को एक साल खिसकाओ
झपट रहे हैं लोग अभी खिड़की पर यह समझाओ।

राय ये तेरे हकौं के हित है, समझो भैया बात
हर एक साल में नया तोहफा राजश्री के हाथ।

हम आपके हैं कौन –करमुक्त-3
ऊपर से नीचे, उतरते क्रम में

हम सारी जनता कहते है, श्रेष्ठ मनोरंजन ये
जम कर सारे देख रहे, चलती है हाउसफुल ये।

कहाँ आप निर्णय कर बैठे मनोरंजन कर छोड़ा
कहदें पकड़ा कैसे, आपने कैसे बात को मोड़ा।

कौन आपके कथन की पुष्टि में आगे आयेगा
समस्त जन हैं दीवाने, कोई ना भरमायेगा।

बतलायें तो है कौन सी बात, मन को ना भाये
माफी दी मनोरंजन कर की, कौन सा तर्क बतायें।

हम आपके हैं कौन –करमुक्त-4
ऊपर से नीचे, उतरते क्रम में

हमको समझ नहीं आता है सरकारी बातों का
राम ही जाने क्या तर्क होता है इन बातों का।

छोड़ी आय करोड़ों की बिन बात बिना आन्दोलन
वरना पड़ते है करने जनता को बड़े आन्दोलन।

था रंजन के नाम टेक्स, रंजन के नाम छोड़ा है
पूरे पागल हैं नेता, अक्कल इनको थोड़ा है।

मुझसे प्राणी बकौ उम्र भर कौन यहाँ सुनता है
फ़िल्म है ये प्यारी जन संस्कारी साधक कहता है।

हम आपके हैं कौन –करमुक्त-5
ऊपर से नीचे, उतरते क्रम में

हकला कर पूछा हमनें, क्या मनोरंजन नहीं होता
क्यों मनोरंजन कर छोड़ा है, कोई नहीं बोलता।

बस आपस में तय करते हैं कर-माफी की शर्तें
वरना पड़ी ही रहती हैं फाइल पर धूल की पर्तें।

चाहे जो भी केस जीत सकता सरकार से लड़के
करते कैसे हैं कर-मुक्ति देखें तो जरा कह करके।

दम लगाके फेंकौ पांसा, जीतना तो निश्चित है
बहे विरुद्ध पवन के, उसका नाम होना निश्चित है।

हम आपके हैं कौन –करमुक्त-6

ऊपर से नीचे- उतरते क्रम में

हमको नहीं शिकायत कर-मुक्ति की बात पे सुनिए
कम से कम कारण बदलें, यह बात सही है गुनिए।

माना आज के दिन तक कई करोड़ दिये हैं इसने
लेकिन पहले बतलायें, क्या रंजन नहीं है इसमें ?

एतराज के तर्क पे ध्यान यदि थोड़ा भी देगें
यह विश्वास है आप भी मेरे संग ही सहमत होगें।

अच्छे संस्कारों कौ पोषित करता है सूरज नित
कर-माफी की यही नजर ठहरेगी बिल्कुल जायज।

प्रथमाक्षर

हम आपके हैं कौन – प्रथम अक्षर

हमने जो देखी तेरी फ़िल्म तब से ही हुए
मस्त मलंग नाचते है भूल सारे काम।

आन जो निभाई ताराचन्द जी के नाम की तो
पहुंचा आकाश में सूरज सम तेरा नाम।

केशव माधव ने जो धारायें चलाई तेज
हैं सारे दीवाने संस्कारों के ले नाम राम।

कौन हतभागी होगा रस में ना डूब जाये
नहीं 'हम आपके हैं कौन' सम दूजा धाम।

हम आपके हैं कौन –(उत्तर- दीवाने तेरे नाम के)

दीनता के भाव से उबारता है राम नाम
वार दिया हमने तो तन मन धन धाम।

नेक काम करना अनेक विधि हमको तो
तेरी नहीं बात उस बात में है तेरा काम।

रेख कर्मन की जो घूम गई एकबार
नाम अपना भी आये सूरज तुम्हारे साथ।

महक ये भावों की है, तेरा मेरा क्या है बोल
केवल इस राष्ट्र को संवारना है मेरा काम।

हम आपके हैं कौन –पंक्ति का पहला अक्षर

हरी का नाम सभी को भाये फ़िल्म प्रमाणित करती
मन मयूर झूमे नाचे रसना हरी नाम सिमरती।

आपकी सारी फिल्मों की तो परम्परा यह पुरानी
परिपाटी पर चला जो सूरज फैली धूप सुहानी।

केशव नाम की महिमा से महका है राजश्री उपवन
हैं आलोकित दिग दिगन्त भास्वर सब प्रांगण मन।

कौशलपुर के राजा राम की बरसे कृपा निरन्तर
नर तन सफल बने बिखरे चहुँ दिशि आशीष स्वर।

हम आपके हैं कौन –पंक्ति का पहला अक्षर

हम तो लुट गये बस पहले ही शॉट में सच कहते हैं
मन माधुरी की मुस्कानों में डूबा सच कहते हैं।

आह नहीं बस वाह ! निकलता मीठे सब अंदाज
पहले जैसा कभी ना देखा, यह प्यारा अन्दाज।

केशों की स्वाभाविक गरिमा रंग अनोखे सारे
हैं कितनी खूबियाँ कह नहीं सकते शब्द बेचारे।

कौन लगाये मोल, फिदा हुसैन भी हो गये भैया
नहीं किसी की ताकत, जो इससे टकराये भैया।

हम आपके हैं कौन –पंक्ति का पहला अक्षर

हलचल मच गई फ़िल्म जगत में, चर्चे चारों ओर
मस्त हो गया सारा भारत ऐसा भाव विभोर।

आसमानों में तारा चन्द बैठे हर्षित होते है
परम प्रिय सूरज के तेज को जान के खुश होते है।

केले के पत्तों जैसी पवित्र, साफ सुथरी सी
हैंकड़ मिटी दिग्गजों की देखी ये फ़िल्म प्यारी सी।

कौरव डाल के सब दुष्टों को राजश्री की सीख
नहीं चले चिर काल तलक हिंसा चोरी और भीख।

हम आपके हैं कौन –पंक्ति का पहला अक्षर

हर कोई दर्शक एक स्वर से करता है तारीफ
मत चूको भैया इस फ़िल्म की सुनी बड़ी तारीफ।

आनन्दित हैं वे सब भी जो हैं फिल्मों के विरुद्ध
पग इस तरफ बढ़ाने से भी हो जाते जो क्रुद्ध।

केवल इस पिक्चर को देख के लट्टू हो गये सारे
हैं दीवाने तेरी फ़िल्म के सूरज चान्द सितारे।

कौल है अपना सौ वर्षों तक इसका जोड़ ना होगा
नक़ल नहीं यह असल है भैया इसका मौल तो होगा।

भई वाह!

हर बार जब भी परदे पर 'भई वाह!' निकलता है
मन मुस्काता है सबका 'भई वाह!' निकलता है।

आराम से ग्यारह टाइम मामा ये बोलते होगें
पकड़ा है पब्लिक ने भी सब साथ बोलते होगें

केवल एक बार मामीजी और एक बार लल्लू जी
हैं दोहराते यह जुमला, नक़ल करने मामा की।

कौन सा है ऐसा दर्शक, यह बोले बिन जो निकले
नहीं एक भी जिसके मुंह से 'भई वाह!' ना निकले।

नहीं करें बिल्कुल देरी – प्रथम अक्षर

हमसे समय हुआ नाराज
मत ठुकराना तुम हमराज।

आयेगीं जो बहारे फिर
पहुंचायेगी मुझे ऊपर।

केवल समय का मारा हूँ
हैं दुश्मन ना बेचारा हूँ।

कौन बात समझे मेरी
नहीं करें बिल्कुल देरी।

नकली नहीं असल देंगें-प्रथम अक्षर

हमने जो अर्जी कर दी
मत लौटाना बेदर्दी।

आप बुलायें हम आयें
परम्परा दोनों निभायें।

केवल प्रश्न पहल का है
हैकड़ नहीं शिष्टता है।

कौल किया तो निभायेगें
नकली नहीं असल देंगें।

मस्त हो गये सभी नजारे-प्रथम अक्षर

मस्त हो गये सभी नजारे
हम आपके आप हमारे

आन बान की, तेरी शान की
पहली शपथ, सूरज सुजान की।

केश ये काले है घुंघराले
हैं सबको उलझाने वाले।

कौन मुसाफिर लगता शातिर
नहीं कवि ये ना ये शायर।

हम आपके हैं कौन – प्रथम अक्षर

हमने जो देखी तेरी फ़िल्म तब से ही हुए
मस्त मलंग नाचते है भूल सारे काम।

आन जो निभाई ताराचन्द जी के नाम की तो
पहुंचा आकाश में सूरज सम तेरा नाम।

केशव माधव ने जो धारायें चलाई तेज
हैं सारे दीवाने संस्कारों के ले नाम राम।

कौन हतभागी होगा रस में ना डूब जाये
नहीं 'हम आपके हैं कौन' सम दूजा धाम।

रंग संयोजन

हम आपके हैं कौन - रंग संयोजन -1

रंगों का प्रभाव होता है मानव मन पर गहरा
सात्विक होते रंग तो लगता कुविचार पर पहरा ।

तमस के भाव जगाने हों तो गहरे रंग दिखाओ
हिंसा सेक्स ही छाये अब तक नजर कहीं ले जाओ।

हिंदी फिल्मों ने अब तक ऐसे ही रंग बिखेरे
फैले हैं समाज जीवन में बदनीयत के घेरे ।

संस्कृति के पोषणकर्ता है राजश्री के लोग
देखो इनकी फिल्मों में सुन्दर रंगों का योग ।

हम आपके हैं कौन- रंग संयोजन - 2

नायक और नायिका रात्रि के एकान्त में मिलते
पहली बार खोल के मन वे ताजे फूल से खिलते ।

प्रेम का गीत गा रहे हैं अपने घर के पिछवाड़े
हल्का नीला रंग वहाँ परिवेश को खूब निखारे ।

नृत्य और संगीत की सौम्य भावधारा के साथ
हल्का नीला रंग जोड़ता सात्विक सी सौगात ।

प्रेमिल जोड़ा पाखी सा उड़ान भरता है ऊँची
कहीं छिछोरापन ना आता प्रेम की धारा सच्ची।

इन्हें देखकर सारे ही माँ बाप करें विश्वास
अपनी युवा संतानों पर जागेगा फिर विश्वास।

हम आपके हैं कौन- रंग संयोजन -3

प्रेम नहीं है पतन मार्ग, धारा ये बहुत पवित्र
ऊंचाई देती नायक को उजलाती है चरित्र।

इस गाने में लाल, हरा या पीला रंग जो आता
नायक और नायिका को वह भोग मार्ग दिखलाता।

फिर पूरी पिक्चर दुखों का एक सिलसिला बनती
कैसे नायक प्रणाम करता जब 'वे' भाभी बनती।

रंग संयोजन इन दृश्यों का महत्वपूर्ण है इतना
निर्देशक की गहरी सूझ का डंका पीटे जितना।

दीदी देवर वाले गाने के रंगो की बात
अगले पत्र में होगी सूरज यह छोटी सी बात।

इतना तो बतलाओ प्यारे क्या तुमको जमता है
इतने पत्र मैं लिखता हूँ कही बोर तो नहीं करता है?

पहेली गजल

जरा सी बात को बढ़ाया तो फसाना हुआ
करते हैं लोग बात,गली गली घर घर। १
जरा सूरत देख आईना तो रख सामने तू
करना नहीं था प्यार, किया तो संभालकर। २
कबूतर, कौवा, कुत्ता, गधा सब देख लिए
किस्से निराले है, तु बचके रहना धारकर। ३
परमात्मा सबके ही कर्मों को देखता है
गलती करने से, पहले ही सुधार कर। ४
संस्कृति संवर्धन का, आधार बने फिल्में
कर्म योगी बन, लालच मत बंदे कर। ५
आदर्श है सामने, राज श्री हमदम मेरे
अच्छी फ़िल्म चलेगी, सभी के दम तोड़कर। ६
युद्ध पहले शिव पूजना हो रामेश्वर में तो
आना तू मैदान में अहंकार निज उतार कर। ७

सिने हस्तियों के नाम पत्र

दिलीप कुमार को सादर-प्रथमाक्षर

दिल्ली ने तो अब समझा, जो किया तेरा सम्मान
लिया "फालके" पुरुष्कार तो रखा उसका मान।

पहले से ही तू तो जनता के दिल का राजा है
कुल इतनी सी बात कि तू तो बिना मुकुट राजा है।

मानी है यह बात राजनेताओं ने भी अब तो
रहनी है तेरी कीर्ति अमर, निश्चित लगता है अब तो।

कोश है तू जिन्दा अभिनय का लाखों जन पढ़ते हैं
साधारण सी तेरी अदाओं का सागर तरते हैं।

दम है किसमें जो तेरी निर्मित लीकों को तोड़े
रहे जमाना तेरा आशिक, बस तू दिल ना तोड़े।

रामानन्द सागर से – प्रथमाक्षर

राम कार्य में लगे आप तो सहस्त्र-बाहु हो जायें
मान लें मेरी बात, मुझे भी अपनी बाँह बनायें।

नंदलाल की शपथ धर्म संरक्षण की रखने को
दल के दल आये होगें, जल्दी युग परिवर्तन को।

साल जुड़े सौ तेरी उम्र में, मगर समय तो कम है
गया समय वापस ना आये, सब स्वजनों का गम है।

रहा समय जो उसको पूरा, मिलकर करलें सार्थक
सेवा में स्वीकार करें, बनकर आया मै पूरक।

अक्षय कुमार के लिए

अव्वल हो तुम आज के दिन में, बने रहो ऐसे ही
क्षय ना हो तेरी कीर्ति, रहे बढती ऐसे ही।

यह मेरी शुभकामना है, तेरे जन्म दिवस की सुनना
कुछ दिन अपने जीवन के दे दिये तुम्हें प्रिय गुनना।

माना तुम इतने ऊँचे हो, छू भी ना सकूं तुमको
रहते हो दिल में लेकिन, जब चाहूँ देखूँ तुमको।

बहुत तीव्र प्रयत्न कर रही, तेरी हमदम बनने
धार लिया है इन राहों पर, होगें काटें चुनने।

ईश करे सौ साल जिये तू, फले कामना सारी
लो अक्षय इस साधक की सुभेंट ये प्यारी।

गोविन्दा को जन्मदिन की बधाई- उतरते क्रम में

गोल गोल दुनियाँ है, गोल है गोविन्दा
गोविंदा की एक्टिंग पे दुनियाँ है फिदा।

फायदा नहीं है प्यारे ज्यादा मोटा होकर
देखने को फिगर ये रखना बनाकर।

प्यारे तेरा जन्म है नाचने गाने को
नहीं पाया जन्म तूने मोटा हो जाने को।

बनना तुम्हें यदि जो ए वन भैया
माधुरी के साथ तीन हिट देना भैया।

अब ले लो जन्मदिन की कामनायें शुभ
नाचो गाओ हँसो हँसाओ बहुत है शुभ।

हम तेरे फैन ना चाहे उधार की एक्टिंग
हत्या जैसी वर्जिन करना नई एक्टिंग।

रेखा तू है भागरेख लाखों के दिल की

रेत पे ना जल पे बनी, तू हल्की रेखा है
खार या पठार में खुदी, गहरी एक रेखा है।
तू नहीं वो फूल जो हवा के संग उड़ जाये
है मीठा त्रिशूल जो गहरा दिल में गड़ जाये।
भाग्य अपने कर्मों से खुद ही बनाया तुमने
गलियां थी छोटी, रास्तों में खुद ही ढाला तुमने।
रेगिस्तानी ढूहों पर खिलाये फूल प्यारे तुमने।
खल मानसिकता को ढाला, अपने प्यार में तुमने।
लाल अभी तक कर सकती हो, कितने चिकने चेहरे
खो जाते हैं इन आखों पर, अब भी युवा घनेरे।
केवल इतना कह दो रानी, राहें कब बदलोगी
दिन बदले हैं अब तो अपना गेटअप तुम बदलोगी।
लगा रहेगा मेला यूँ ही, दर्शक कम ना होंगें
किर्ती पताकायें फहरेंगी चर्चे जग में होंगे।

शेखर कपूर से कहा है- प्रथमाक्षर

शेखी नहीं मारता फिर भी कह सकता दावे से
खरा खरा लिख सकता हूँ मैं आपके समझाने से।

रहा आपकी हस्ती का कायल वर्षों से बन्दा
करना काम आपके संग में, यह है सपना अपना।

पूरा लेखक हूँ मैं सुनलें, कुछ भी लिख सकता हूँ
रहना है इस नगरी में, कैसे भी रह सकता हूँ।

सेहत आपके जैसी है, मिजाज भी कुछ मिलते हैं
कहकर आया हूँ घर में, बस अच्छा तो हम चलते हैं।

हाय ना लेना इस लेखक की शीघ्र बुलाना आप
है बैचैन निगाहें, कब तक सामने होगें आप।

शशिकपूर को कहना है – प्रथमाक्षर

शक की ना कोई गुंजाईश, फ़िल्म वाले हो पक्के
शिकायत भी नहीं आपसे, काम में भी हो पक्के।

करनी है एक बात आपसे, नया नया आया हूँ
पूरा लेखक हूँ अब तक लिखता छपता आया हूँ।

रहना है अब फ़िल्म जगत में राह नहीं बनती है
कोई हाथ पकड़ ले तब ही राह यहाँ बनती हैं।

कपूर तो फिल्मी दुनियां के दादा-परदादा हैं
हल कर दूँ लिखने की समस्या मेरा यह वादा है।

ना करना तो बहुत सरल है, मत करना ये काम
है विश्वास आप देंगें, मुझको कोई ढंग का काम।

मनोजकुमार मुझे सुनें – प्रथमाक्षर

मन प्रसन्न हो जाता है, जब आपका नाम आता है
नोक झोंक में नहीं सिर्फ शालीनता में आता है ।

जम कर किया है देशभक्ति का फिल्मों से ही काम
कुछ ऊपर और अलग सा दिखता आपका सारा काम ।

मान लिया है दिग्गज तुमको सुधि कुछ अपनी ले लें
रहने आये हैं बम्बई में अपनी शरण में ले लें ।

मुश्किल से मुश्किल हालात में भी मैं लिख सकता हूँ
झेल रहा हूँ कष्ट मगर फिर भी मैं राह तकता हूँ ।

सुनें आप और लिखने का एक अवसर दे दें जल्दी
नेकी का ये काम आपको फल भी देगा जल्दी ।

रविन्द्र जैन से मिलना है। - उतरते क्रम में

रहते होंगें व्यस्त सदा, संगीत साधना में ही
कवि ह्रदय है रचते होगें, सुन्दर कवितायेँ भी।

है इन्द्र की संतुष्टि का रचा तेरा संसार
हुआ है जै जैकार तेरा, फिल्मों ने किया स्वीकार।

यश से कौन ना बिसरा दे साधना पंथ इस जग में
लेकिन तुमसे ना छूटी यह आत्म साधना जग में।

इसिलए सब मिलना चाहे मै भी उनमे एक
गीत औ' सुरका मिलन योग हो, चाहत मेरी नेक।

यथाशीघ्र समय देना आऊँगा श्री चरणों में
गीत बहुलता से रचने हैं, बैठ के श्री चरणों में।

रेखारानी को सप्रेम- प्रथमाक्षर

रेला तू तूफान का, जिस राह गुजरता जाता
खाली हो जाती गलियां, जलजला ही जैसे आता

राम ही समझे तेरे तेवर, हम क्या चीज है जानी
नीरस खाली जीवन में तु भरती प्यार का पानी

कोई नहीं आज इस दिन टिका है तेरे आगे
सही बात मैं कह सकता हूँ माधुरी के भी आगे

प्रेम हो पहला लाखों का तुम सुनो हमारी बात
मत ठुकराना चिट्ठी, भेजो फोटो तो बने बात।

सुभाष घई को कहना है- प्रथमाक्षर

सुनें आज मेरी, मैं आपकी छाया हूँ साकार
भाग के आया हूँ बम्बई में, नहीं कोई आधार।

षड्यंत्रों का जाल बुना, मैं जूझ रहा हूँ हरपल
घर अपना भी बन जाये, यह कोशिश रहती हरपल।

इर्ष्या नहीं, गर्व करता हूँ, आपने जो कर दिखाया
कोई नहीं दूसरा, जो इस कदर से है छा पाया।

करते रहे हैं नये नये लोगों को लेकर काम
हर कोई पहुंचा ऊपर साबित है आपका काम।

नाम मेरा भी जुड़े आपकी टीम में यह है चाहत
है तेरी मर्जी पर निर्भर, आगे की सब राहत।

<u>सुभाष घाई से- प्रथमाक्षर</u>

सुर और ताल का संगम हो तुम, फ़िल्म जगत के ताज
भाग्य बनाया स्वयं कर्म से, अब करते हो राज।

षट कोणों में सजी हुई, तेरी सुन्दर रचना है
घालमेल कि नहीं जरुरत, बात सही कहना है।

ईश्वर करे तेरे यश में अब चार चाँद लग जावें।
सेहत सुन्दर रहे, उम्र सार्थक लम्बी तू पाये।

सुभाश घई को- प्रथमाक्षर

सुन्दर फ़िल्म बनाते हो तुम, यह सबने माना है
भा जाये पहली ही नजर में जग यह जाना है।

शरण जिसे भी दी तूने ने, वह आज सितारा ऊँचा
घर है तेरा लाखों दिल में, यही सार समूचा।

ईख के मीठे रस जैसा, तेरा राम सभी कहते हैं
कोई नहीं विरोधी तेरा, हम भी यहीं रहते हैं।

अशोक कुमार को प्रनाम – प्रथमाक्षर

अदभुत काम किया वर्षों तक, सबके दादामुनि हो तुम
शोर नहीं कोई प्रचार का सबके ऋषि मुनि हो तुम ।

कर नहीं सकते हम तारीफ शब्द शायद कम पड़ जायें
कुछ भी कम होगा,सौभाग्य जो हम कुछ लिख पायें ।

मार्ग बताना कुछ हमको भी, नए नए हम आये हैं
रहना जटिल फ़िल्म नगरी में, हम तो कुछ भरमाये हैं ।

कोई नहीं सहारा कैसे पकडूँ लेखन की मैं डोर
प्रयत्नों से कुछ ना होता, सुबह रात फिर होती भोर ।

नाम आपका ऊँचा है कुछ कर सकते हो तो बोलो
मस्त मलंग उम्मेद की खातिर, किसी निर्देशक से बोलें ।

चिन्ता आप करे चन्द्रप्रकाशजी- उतरते क्रम में

चिन्ता नहीं है मुझे कि मैं टिक पाउँगा या नहीं यहाँ
कान्ता भी निश्चित भाव से बनी रहेगी सदा वहाँ।
मेरी आशा और निराशा अर्थ विशेष नहीं रखती
पर तपस्या संगठन थी, ना यूंही बनती मिटती।
जो समर्थ कर्मठ हैं उनपर जिम्मेदारी ज्यादा हैं
संघ बंधु परेशान न हो, ये अभाबित ही वादा है।
बात स्वार्थ की सच में नहीं यें, परम भाव से आया हूँ
मनु सा सरल, इन्द्र ना हूँ, ना भोग से ही भरमाया हूँ।
आपके जैसा काम के प्रति लगन समर्पण सिखा है
गुणित होगा यश आपका अपना यही तरीका है।
हम दोनों की बात नहीं यश भारत माँ को अर्पित हो
सम विचार के साथ मिलें ये जीवन पूर्ण समर्पित हो।
81 “अमित हो तुम तो क्या शुभ कामना नहीं लोगे?”

अकल्पित स्थान पाया और बना के रखा यश को
मिला तुम्हे जो दुर्लभ होगा इस दुनिया में सबको ।**वाह**
तन तो चला जायेगा एकदिन लेकिन नाम रहेगा
हो कारण लाखों के दिल में सारा जहाँ कहेगा ।
तुमने किया कमाल नई राहें निर्मित की अपनी
मत भटके कोई कलाकार आजमाले किस्मत अपनी ।**तुम**
तोड़ा सारी बाधाओं को जो चाहे सो आये
क्या कर सकते हो बोलों झट राहें खुल जायें ।
शुरू किया हमने भी यह क्रम आज के शुभ दिन
भला हो जो लग जाये अपनी उम्र तुम्हे इस शुभ दिन।**और**
कार्य तुम्हारे सभी सिद्ध ,आनन्दित जन-गण-मन हो
मन चंचल है इसे साधने की क्षमता तुम पाओ ।
नाम से जो उम्मीदें बनती सब पूरी मैं करूँगा
नहीं एक भी विषय के जिसपर थोड़ा भी अटकूंगा ।**मैं**
लोक रंजन और संस्कार के माध्यम छोटा वादा
गेह गेह में चर्चित हो यह योग बने बेपरदा ।

बधाई हो रेखा

बहुत ख़ुशी है आज जो तुमसी कलाकार जन्मी है
धानी तेरी चुनरिया हो अब सबकी ये मर्जी है।

ईख, गंडेरी जैसी मीठी बोली वैसी काया
हो तुम किस खुशकिस्मत की, यह तो बतलाओ माया।

रेख भाग्य की उसकी चमके जिसको तु अपना ले
खा जाये कच्चा सब उसको जिससे तु नजर फिरा ले।

रेखा को सप्रेम – प्रथमाक्षर

रेखा तेरी किस्मत की कुछ और वर्ष यूँ दमके

ख़ास कामना तेरे लिये दिवाली का ये प्रकाश

कोई छैला बनकर आये तेरा जीवन प्रकाश ।

सही प्रेम-पटरी पर दौड़े सरपट मन की आस।

प्रेयसि लाखों हृदयों की, पर यह ना पूरा पड़ता।

किसी एक पर राज करो, तो ही यह मनवा भरता।

सिनेमा शताब्दी पर

सिनेमा साहित्य की उत्तम विधा

सौ वर्षों से हिन्दी सिनेमा दुविधा के पथ पर है।
कौन कहे साहित्य इसे कविता, कथा या रुपक है?
इधर जरुरत यन्त्र-मन्त्र, और सही तन्त्र की देखो।
भारतीय लेखन उत्तम, पाठक को तरसे देखो।
आगे दिखे फ़िल्म उस तरफ़, विवाद में साहित्य।
हित इक-दूजे की करते, अनजाने रहता तथ्य।
फ़िल्मों का ये सत्य बोलता सिर पर चढ कर।
पूरी यात्रा हितकर साक्षी निज मन-जन-गण।
जन का साथ निभाती फ़िल्में, रंग भरती सपनों में।
भरमाते हैं प्रवचन-शिक्षा-राजनीति अपनों में।
अनेक बातें हैं जो फ़िल्मों को साहित्य बनाती।
सिने-जगत के सिर सार्थक-संवाद ताज पहनाती।

* क्रम – नीचे से ऊपर उतरते क्रम में

फ़िल्मी गीत-संगीत का समाज पर प्रभाव – उतरते क्रम में

फ़िर आई चर्चा गीतों-नृत्यों-संगीत सुरों की।
फ़िल्मी जगत के माहिर उस्तादों कवियों भक्तों की।1
फ़िरंगी गया, जनवादी सरकारें आती-जाती।
वादों की तकरीरें जन के मन को और उलझाती।2
विवाद में संवादों का अवसर देती है सिनेमा।
समझ आयेगी मानव को, मानेगा इसकी गरिमा।3
जन-गण-मन तक पहुँची सूक्ष्म कलायें इसके बल पर।
प्रभाव हिन्दी फ़िल्मों का अब बोल रहा सिर चढकर। 4
प्रेरक-मीठे गीतों को सरताज करे धुन प्यारी।
घर-घर नृत्यों से गरमाता, मस्त माहौल खुमारी। 5
चित्रकला निर्माणकला गजब सुन्दरता के संग।
हरयुग को सजीव करती, पर देती है अम्बर संग।6
छोटी-मोटी हर कला का आश्रय रहता इसमें।
पटकथायें थीम पकड़कर क्षिप्र गति ले इसमें।7
निर्देशक का यह माध्यम, उसका प्रभाव सर्वोच्च।
दृश्य-श्रव्य यह कला आज बन गई चाव सर्वोच्च।8

दृश्य-श्रव्य माध्यम की सम्प्रेषणीयता

ताल जम गई लय में आया, सौ वर्षों के क्रम में।
तय ना थी मंजिल इसकी, बढता आया यह भ्रम में।1
करणी नीची, कथनी ऊँची, सिनेमा की यह दुनियां।
बस भाषण के बल पर बहुत चमकती है यह दुनियां।2
तगड़ी सम्प्रेषण क्षमता है, झूठ को सच कर देती।
आज सिनेमा सच को झूठा, जन-मन में कर देती।3
कौशल तकनीकी उत्तम, जो पा ले सही विचार।
धरा स्वर्ग, मानव मन का हो बहुत शीघ्र उद्धार।4
गलत रास्ता छोड़े मध्य में, दोनों जनम डूबोये।
सही एक सुख-समृद्धि मार्ग पे, मानव को ले आये।5
सौ वर्षों का कार्यकाल अब व्यतीत की है बात।
वर्तमान अवसर मानव श्रम पा सकता साक्षात।6
लाख-करोड़ जन-गण-मन पश्यन्ति नित्य सिनेमा।
सही आचरण पूर्वक सही जीवन-दृष्टि दे सिनेमा।7

* क्रम – नीचे से ऊपर उतरते क्रम में

साधु-सन्तों के उपदेश और सिनेमा - प्रथमाक्षर

सारे मानव खोज रहे हैं, सुख-समृद्धि की राह।
धुर विरोधी वादी तक सबकी है एक ही चाह।1
संप्रदाय-संस्थायें सारी सबका दावा एक।
तोड़े दुखों की जंजीरें, बस उनकी बात है नेक। 2
केवल आस्था-परम्परा का पोषण सब करते हैं।
उसके बल पर जन-जन के सब लोक व्यर्थ करते हैं।3
पर लोक में पायेंगे, कहकर भ्रम फ़ैलाते हैं।
देकर गच्चा वर्षों से मानव-मन भटकाते हैं।4
शक करते हैं सच पर ऐसा मानव को भरमाया।
औट सम्प्रदायों की लेकर, जन-जन को लड़वाया।5
रमण पूर्वक हंसी-खुशी पा सकता है सुख मानव
सिर्फ़ यह जनम नहीं परलोक भी सुधार सकता मानव।6
नेक राह दिखलाये फ़िल्में, सही स्पर्श के साथ।
मार्ग प्रशस्त करे मुक्ति का समृद्धि के साथ।

शिक्षा-व्यवस्था और सिनेमा प्रथमाक्षर,नीचे से ऊपर

मान रहे हैं शिक्षा-शास्त्री, है बदलाव जरूरी।
नेक बनाने मानव को, शिक्षा हो सही जरूरी।

सिरे से चलती भूल, कहीं भी जीवन से ना जुड़ती।
रहना है धरती पर, यह आकाश की बातें करती।

औकातें मानव की इसने इतनी बौनी कर दी।
स्थापनाएं मन-मष्तिस्क में, दानवता की भर दी।

वही मिलेगा फ़ल जिस फ़ल का बोया गया है बीज।
व्यय हो जाते सभी निरर्थक, तत्व बनें निर्बीज।

क्षात्र तेज दे रहा सिनेमा, लिंग-उम्र निरपेक्ष।
शिक्षा का माध्यम हो सिनेमा, रहे धर्म-निरपेक्ष।

राजनीति बनाम सिनेमा- उतरते क्रम में

राज फ़ाश होते सभी, नेताओं के देख।
काज करे ना काम कुछ, धौंस मुफ़्त की देख।

कथनी-करनी भेद का, नेता मुखिया जान।
भ्रष्ट नीति ऐसी चली, ज्यों गिरगिट ही मान।

छुपता कब तक पाप ये, घड़ा फ़ूट ही जाय।
कुछ भी आना-जाना ना, कूट-नीति दोहराय॥

पदासीन हैं कमतर जन, डींग हाँकते खूब।
उथले (जल) भी मित्र का, सिर जाता है डूब।

सृष्टि की सुन्दरता का, नेक मन्त्र है एक।
मन चलचित्र में ही रमा, सुन्दर-सुखद है नेक।

*नोट – ऊपर से नीचे, क्रमशः उतरते अक्षर

सिनेमा ने किया जन-जागरण- उतरते क्रम में

सिफ़र हुआ परिणाम, न बदला समाज का कोई ढंग।
अनेक अन्ना-गाँधी बीते, उनका चढा न रंग।
अनुमान करके देखें, फ़िल्मों का प्रभाव जाँचें।
अपनाने लालायित कितने जन-गण-मन भी बाँचे।

स्वीकारा लेकिन किसने, सुधिजन करते हैं उपेक्षा।
इसके हित अभियान, महापुरुषों से बनी अपेक्षा।
नहीं हो कोई राजनीति, शिशु-मन से सही समीक्षा।
बच्चे-युवा-वृद्ध जन-मन की कर ले कोई परीक्षा।

साबित ना हो तो दें सजा, खुशी से स्वीकारुँगा।
फ़िल्मों का दीवाना हूँ, विराग में ना जाऊँगा।
सुधर जाएगा समाज देना ध्यान सही हों फ़िल्में।
कैसे मान लिया बिगाड़-कारण होती हैं फ़िल्में?

प्रशासनिक भ्रष्टाचार पर प्रहार–नीचेसे उतरते क्रम में

रहना है जिस देश, वही भाषा-भूषा अपना लो।
कहावतों का सार समझ, जीवन को धन्य बना लो।
है विप्र देश सारे जग का मंगल साधना है काम।
निराहार खुद रहकर, सबको खिलाता जो अविराम।

भारत अपनाता आचरण में न्याय-सत्य और धर्म।
कभी नहीं भरता तिजोरियां, कह चोरी का कर्म।
संस्कृति हित आचार-संहिता, पर आजीवन चलना।
जन-जन आदर अष्टावक्र का, आत्म भाव में जीना।

दूर करे सरकारी भ्रम के दुष्प्रचार को फ़िल्में।
सरकारों की जटिल विकटता को सुलझाती फ़िल्में।
सशक्त सामाजिक साहित्य निर्माण फ़िल्म है जानो।
मानव मन का सूक्ष्म-विस्तृत सटीक हल है मानो।

प्रतिबन्धन संवाद विधा पर, शासन का है संताप।
दर्पण दिखलाता चेहरा हरेक प्रकार का पाप।

देश के युवा वर्ग पर प्रभाव – नीचे से चढते क्रममें

बदला देश का भाषा-भूषा-भाव चमत्कृत करता।
दुनियां को विस्मित करता अब भारत भाल चमकता।
नरेन्द्र मोदी ज्यों फ़िल्मों का प्रतिकार कठिन है।
चढती वय का गति-रक्षण कुछ और कठिन है।

कल्पनाओं से भी ऊपर है युवा वर्ग की चाहें।
रचना-ऊर्जाएं स्वर्ग, जब चाहें युवा ले आएं।
अक्सर कहावतें सच होती, फ़िल्में सिर चढ बोले।
देश की हवा युवा से बने, बहे और डोले।

भारत युवा देश है, सारी दुनियाँ को ललकारे।
इसके शौर्य, धैर्य, कौशल से बिना युद्ध अरि हारे।
होश में आए फ़िल्म-कला को गाली देने वाले।
देश समाज के सारे सूत्र हैं फ़िल्मों के ही हवाले।

बाल मन को पढती हिन्दी फ़िल्में- उतरते क्रम में

बाल-सूर्य सा उभरता, हिन्दी फ़िल्म-नजारा।
कल का चित्र स्पष्ट है, हॉलीवुड बेचारा।
दिन-महीने- युग गए, शेष उपेक्षा दौर।
जन-मन-गण हामी भरे, अब फ़िल्में सिरमौर।

जन-जन को प्रेरित करे, बाल-मनोविज्ञान।
सुनो शिशु की पहले तुम, बाद में देना ज्ञान।
आडम्बर को ओढकर, बिसराना ना मूल।
शिशु-मुस्कानें आरती, कभी न जाना भूल।

मासूमियत-नीर्मित, हिन्दुस्तानी फ़िल्म।
दुनियाँ को बौरा रहा नन्दी बड़ा यह इल्म।
गुरु मानकर शिशुओं को, फ़िर से देखो मित्र।
दुःख नहीं इस दुनियाँ में, फ़िल्में दिखाती चित्र।

<u>बूढों को जवान बनाती हैं फ़िल्में- चढते क्रम में</u>

देवानन्द से शारुख तक, फ़िल्में दे संदेश।
रोमाँटिकता से बने बूढे फ़िर से शेर।
नई षोडषी हीरोईन, हैं बुज़ुर्ग से हीरो।
नोट बड़े ही बरसाती, भले कहानी जीरो।

सुरा पुरानी का गाना, रिन्द सुनाते खूब।
नशा टूटता कब भला, सारे जाते डूब।
जन-गण-मन की टेर है, युवा रहें सौ वर्ष।
नाच-गान-वाह वाह चलें, बढे निरन्तर हर्ष।

हो नाराज सनम अगर, फ़िल्म दिखा के देख।
खुद को बेहतर समझाते, अब पर्दे के लेख।
बूढों ने कब ना किया, कभी इश्क से बोल?
बूझो उनकी भावना, फ़िल्म बताती मोल।

नैतिकता का सार्थक संदेश देता सिनेमा

धन-दौलत-पद-नाम-यश बहुत कमाते लोग।
टीवी पर नित ही आएं प्रवचन देने लोग।

प्रवचन चलते हैं मगर फ़र्क सिफ़र ही जान।
प्रवंचन खुद बन गया, देखता नहीं कमाल।

अनैतिकता सिर चढी, बना देश बदहाल।
नेता, शिक्षक, साधु अब बेशर्मी की मिसाल।

अनैतिक कहलाती है, दे नैतिक संदेश।
प्रेरणा पाए फ़िल्म से, संस्कृति वाला देश।

सूक्ष्म कलाओंपूर्वक, सम्प्रेषित करता है।
कर्म-धर्म औ' अर्थ का शुभ गुम्फ़न करता है।

हिन्दी फ़िल्मों ने साबित, किया है शुभ ही श्रेष्ठ।
सदाचार का पाठ नित, स्वीकृत सबको ज्येष्ठ।

सार्थकता परिमाप है, हर वस्तु का मित्र।
साधक का सौभाग्य है, जो देख रहा शुभ चित्र।

मति-गति शुभ है जन-मन की, दर्पण बनती फ़िल्म।
नैतिकता आन्दोलन की टीम-हरावल फ़िल्म।

*नोट – नीचे से ऊपर चढते क्रम में

सिनेमा और नारी समाज - प्रथमाक्षर

सिर पर चढकर बोल रहा है, जादू आज सिनेमा का।
नेक राह दिखलाता फ़िर भी है बदनाम सिनेमा का।

माल बनाता नारी को, खुश होकर सारी नाच रही।
और नशा बढ रहा निरन्तर मन मानुष का बाँच रही।

रहना है नारी के संग, सारा ही जीवन डर-डर कर।
नाम प्यार का आ न सके, इस डरे हुए नर के मुँह पर।

रीत-प्रीत की बदल रही, अब नारी हाथों नकेल दो।
समझो बदला वक्त मनुज, ब खुद को नी चे धकेल दो।

माना मुश्किल बहुत बड़ी, पर कहो हाथ में अब क्या है?
जब शिक्षा और परम्परा ही फ़िल्म हुई तो बचा क्या है?

दादा फ़ाल्के के पदचिन्हों पर समाज – चौथा अक्षर

बीती सदाचार की बातें, अचार अब बाजारों में।
होनी अदावतें सबसे, जो उठी बात हज्जारों में।
करो सफ़ाई मन-मस्तक की, कचरा फ़ेंको दूर जरा।
मत हल्के में लेना इसको, चिन्तन गहरा करो जरा।

जीवन के दायरे बड़े हों, धरती अब कॉलोनी है।
हरेक पल में पूरा जीना, जिन्दगी सुघड़-सलोनी है।
तेरा कद भगवान बराबर, क्यों रोता है हे मानव।
सारे हैं चिन्हित पहचाने रस्ते ना डरना मानव।

बात उन्होंने कही, मगर अब दुनियां ने अपना ली ही
ऊँचाई पहाड़ की सह-अस्तित्व के बल ही पा ली है।
जीत-हार संघर्ष की चर्चा, बीते युग की बात हुई।
कर हँसकर हर काम, तेरे खातिर यह सृष्टि पूर्ण हुई।

है भरमाने की सारी रचनाएं फ़िल्मी दुनियां की।
होगी आज खुशी दुगुनी पूरी आशाएं दुनियाँ की।

महबूब और दिलीप कुमार सदा बहार हैं

अजर-अमर हैं हिन्दी फ़िल्मों में दोनों हस्ताक्षर।
भारतीयता का रहता इनका अक्षर-अक्षर।1
कीर्तीमान ही रहा है अब तक बीत रहे सौ साल।
दिलीप-महबूब दोनों का जादू है बेमिसाल।2

निर्देशन व अदाकारी की अद्भुत यह जोड़ी थी।
ट्रेजडी-किंग हँस भी सकता है, किसने यह सोची थी?3
'आजाद' की 'आन' रखी, हरफ़नमौला कहलाए।
देव, राज, ये कुमार; संग-संग तिकड़ी खूब बनाए।4

जन-गण-मन कुल बढा रहा है, अब इनका शुभ नाम।
न पाया फ़िल्मों में परिवारी-सदस्य सम्मान। 5

तारीफ़ें खूब मिली लेकिन सिर पर चढने दिया जरा।
जन-गण-मन दिवाना हुआ, सम्मान न नीचे हुआ जरा।6

संस्कृति-मर्यादा रखी, अश्लील न कभी परोसा।
अभिनय कला और निर्देशन का ऊँचा किया भरोसा।7
आईकोन हैं अब तक दोनों, नहीं कोई मतभेद।
दर्शक पर काबू है पूरा, है मगनून ये देश।8

बढता देश महकती बगिया उन्नति पथ पर गति है।
फ़िल्मी हलचल मति-गति, परिवर्तन की शुभ गति है।9

*नोट – सातवां अक्षर, नीचे से ऊपर

राजकपूर हैं सिनेमा का एक स्कूल

चरचा जरा सी हो जाए अब खानदानी एक्टर की।
वो पृथ्वीराज का बड़ा लाल, परदे के बड़े एक्टर की।1।

उसका हक है पाए जन-गण-मन से आदर पूरा।
करता आपूरित जन-मन की, प्रिय चाहत को पूरा।2

हरदम रचता रहा नए सपनों का महल सुहाना।
नारी तन हैं कला का सुन्दरतम आयाम पुराना।3

निर्विवाद सिकन्दर सा शो-मेन सिनेमा का था।
गाथा अपनेपन की नित नूतन अन्दाज में कहता।4

बहुत कमाया नाम और पैसा, स्टूडियो अपना था।
सरकारो का झुका सके सिर, ऐसा उसमें दम था।5

राह सुझाए प्रेम और मानवता की फ़िल्मों से।
ये एकाएक हो न सके, तप आवश्यक है सिरे से।6

सुना फ़ेल स्कूल से रहे, पास किया फ़िल्मों ने।
दुनियाँ फ़ुल नम्बर देती, चाहा सारी जनता ने।7

*नोट – पाँचवां अक्षर, ऊपर से नीचे

गुरुदत्त के अमिट पदचिन्ह

निर्देशन के विधा-गुरु, एक्टिंग में थे स्वाभाविक।
मन के शाश्वत शुरु भाव को कर देते थे सार्थक।1।
पाते हैं सबका आदर, ऐसे थे चित्त-चितेरे।
वहीदा को दिया चित्त, फ़िर खो गए चित्त-लुटेरे।2

चितेरे संवेदन के, मन के कोमल भाव उकेरे।
केमरे की नजर अक्स इक मर्यादा में बिखेरे।3
लम्बे समय से अमित दृश्य जन-मन को रुचते।
श्रोता-दर्शक ने रट रखे, अद्भुत किस्से।4

बदली हैं धाराएं परम्परा ने करवट ली है।
कोरा कागज गुरुदत्त, सबकी इसमें हामी है।5
रचनाकार स्वयं चिन्हित होता है निज रचना में।
इन्द्र-धनुषी प्रेम-चिन्ह दिखते उनकी रचना में।6

*नोट – आठवां अक्षर, ऊपर से नीचे

प्रेम तिकड़ियां

रीत है दुनियां की, यौवन में उभरे प्रेम-प्रवाह।
वंश की कड़ियां जोड़ने वाला अमर देह का भाव।

हर एक मन को करे तरंगित, एक फूल दो भँवरे।
प्रकृति ने ही उलझा दी तो चिर उलझन क्यों सँवरे?

गम देता तीनों जन को, कोई एक मार्ग से हटता।
प्रेयसि का दिल जाने वाले को स्मरण चिर रखता।

*नोट – नीचे से ऊपर, चढते क्रम में

अविस्मरणीय प्रेमिल जोड़ियां

नर्गिस-राज से शाहरुख मियां पर्दे के बने सम्राट।
जुड़ती गई अद्भुत कड़ियां, बनता परिदृश्य विराट।
घायल-टूटे हृदयों को जोड़ती, समय की कारा।
हर मौसम जल-थल हर्षाती, प्रेमिल मन की धारा।

हेमा-धरमेन्दर मिलन है उत्तर-दक्षिण योग।
अनेक पा जाते प्रेरणा, फ़िल्म बने संयोग।
प्रेम-परिणय से पहले तक, लगे अछूता सच्चा।
बन परिणीता वही प्रेमिका, भोजन जला या कच्चा।

सुनकर, देख-सूँघकर अथवा स्पर्श से ना हो निर्णय।
चिर स्मरणीय बने केवल शिव-पार्वती का परिणय।
कविताओं में समाता है कब प्रेम-समुन्दर कहना।
अद्भुत और अछूता यह अहसास हृदय में रखना।

*नोट – नीचे से ऊपर, चढते क्रम में

कलाओं को मिली नई ऊँचाइयां

कल का यह साहित्य, हर कला का व्यापक आयाम।
बलात् मन-मस्तक झुकता, इतना सशक्त आयाम। 1।
बाधाओं पर विजय वरें, ये कला है सबसे ऊपर।
दुनियां को जय कर सकती, जो धारा है श्रेयष्कर।2

हितकर मितकर श्रम-पूँजी से अमित हुआ निर्माण।
सत्साहित्य ने ली करवट, आसान बना निर्वाण।3
नृत्य-गान-वादन-अभिनय और भव्य भवनशैली का।
चित्र-काव्य-लेख, नई से नई कला शैली का 4

फ़िल्मों ही ने पहुँचाया, ऊँचा कर दिया है मान।
है कलाकार की पहली चाहत, फ़िल्मों में हो स्थान।
सौ वर्षों की सहज साधना इसकी पूर्ण हुई है।
जन-गण-मन गाए कहानियां, लोकोक्ति सी बनी है।6

*नोट- ऊपर से नीचे, उतरते क्रम में